आत्मचिंतन-आत्मदर्शन द्वारा आत्मानुभूति

आत्मा के स्वरूप की अनुभूति :-

पाँच तत्वों के बने हुए इस नाशवंत शरीर से भिन्न मैं एक चैतन्य शक्ति आत्मा हूँ.... इस शरीर में भृकुटि के बीच बिराजमान मे आत्मा एक चमकता हुआ सितारा हूँ.... मै चैतन्य शक्ति आत्मा अति सूक्ष्म हूँ... बिंदु स्वरूप हूँ... अणु से भी सूक्ष्म हूँ.... मै आत्मा दिव्य प्रकाश बिंदु, ज्योतिबिंदु स्वरूप हूँ.... मेरा यह शरीर मुज आत्मा के लिए वस्त्र मात्र, साधन मात्र, वाहन मात्र है..... मे आत्मा अपनी पाँच कर्मेन्द्रियों का एवं पाँच ज्ञानेन्द्रियों का अधिपति हूँ... मै राजा हूँ.... इस भृकुटीरूपी अकालतख़्त पर विराजमान मे एक अकालमूर्त कर्मेन्द्रिय जित आत्मा हूँ.... मै आत्मा मेरे समग्र शरीर का नियंत्रण इस स्थान पर बैठकर कर रही हूँ....

आत्मा की शाश्वता की अनुभूति :-

मै चैतन्य शक्ति आत्मा अजर हूँ.... अमर हूँ.....अविनाशी हूँ.... मेरा अस्तित्व अनादि समय से है और अनंत तक बना रहेगा.... मुज आत्मा का न कभी जन्म हुआ है न कभी मृत्यु होगी.... यह शरीर जन्म लेता है और शरीर की मृत्यु भी होती है.... लेकिन मै आत्मा तो शाश्वत हूँ सनातन हूँ.... ऐसे तो मैंने अनगिनत शरीर धारण किये है और आगे भी करती रहूंगी.... लेकीन मै चैतन्य शक्ति आत्मा नित्य, अनादी, अनंत हूँ...

आत्मा की तीन सूक्ष्म इन्द्रियों की अनुभूति :-

मै जड़ तत्वों से भिन्न एक चेतन सत्ता हूँ.... जो जड में नहीं है ऐसी अनेक शक्तियां मै चैतन्य आत्मा धारण करती हूँ.... मै विचार कर शकती हूँ, इच्छा कर शकती हूँ, कल्पना कर शकती हूँ.... ये सब सामान्य शक्तियां ही तो मेरा मन है.... मन मुज आत्मा की संकल्प शक्ति है... अति सूक्ष्म शक्ति है..... मेरे संकल्पों की शक्ति की गति अमाप है.... मुज आत्मा मे अन्य कई तार्किक शक्तिया भी है.... मै आत्मा परख सकती हूँ, समज सकती हूँ, न्याय कर सकती हूँ चेकिंग कर चेंज हो सकती हूँ, निर्णय कर सकती हूँ..... मुझ आत्मा की यह तार्किक शक्तियाँ ही मेरी बुध्धि है.... बुध्धि मुज आत्मा का विवेक है..... मै आत्मा अन्य एक विशिष्ट शक्ति को भी धारण करती हूँ..... मै जो भी मन से सोचती हूँ, बुद्धि से निर्णय करती हूँ, और उसके आधार पर जो कुछ भी कर्म कराती हूँ उसकी छाप (Impession) मेरी चेतना पर पड़ती है.... मेरे हर विचार, निर्णय और कर्मो की पड़ी हुई छाप का संग्रह ही मेरे

संस्कार है, मेंरा व्यक्तित्व है.... कीसी भी संस्कार की छाप बार बार पड़ने से मेरा स्वभाव, द्रष्टिकोण, और अभिगम बनता है.... मेरी द्रष्टि वृत्ति का आधार मेरे संस्कार है.....

आत्मा के मूलभूत स्वधर्मो की अनुभूति:

शांति : शांति तो मुज आत्मा का आदि-अनादि स्वभाव है, स्व धर्म है..... इसलिए मै आत्मा परम शांति की इच्छुक रहती हूँ.... मै आत्मा अपने मूल स्वरूप में शांत हूँ.... शांति तो मुज आत्मा के गले का हांर है.... मै खुद शांति का एक भंडार हूँ.... अभी तक मै व्यर्थ ही शांति के लिये भटक रहा था.... मै खुद एक आत्मा शांत स्वरूप हूँ.... शांति के साथ मुज आत्माका कितना घनिष्ठ संबंध है.... परमशांति का धाम परमधाम मुज आत्मा का निज धाम है... जहां परम शांति, नीरव शांति, गहन शांति छाई रहती है... एसे शांतिधाम की निवासी में आत्मा परमशांति की अनुभूति कर रही हूँ...

प्रेम: प्रेम मुज आत्मा की महत्वपूर्ण शक्ति है..... मेरी चेतना का स्वधर्म है.... मेरे अनादि अस्तित्व और मेरे अन्य के साथ के संबंधो की महत्वपूर्ण कड़ी है.... मै मूल स्वरूप से प्रेम स्वरूप आत्मा हूँ.... मेरा परम पिता शिव परमात्मा प्रेम का सागर है.... प्रेम का भंडार है.... मै उसकी संतान मास्टर प्रेम स्वरूप हूँ.... प्रेम सागर की गोद में मै विशुध्ध आत्मा प्रेम विभोर हो रही हूँ.... विशुध्ध प्रेम की सरिता मेरे ह्रदय मे उमट रही हैं... मुज आत्मा से भातृत्व का निस्वार्थ भाव छलक रहा है.... जो चारो और विश्व मे फ़ैल रहा है... मै एक प्रेम स्वरूप आत्मा हूँ...

पवित्रता : पवित्रता मुज आत्मा का आदि-अनादि संस्कार है... मै एक विशुध्ध आत्मा हूँ... शांति और निजानंद की जननी पवित्रता है... पवित्रता के बल पर ही मै विश्व नाटक के आदि मे सर्वगुण संपन्न देवात्मा थी... मेरा व्यक्तित्व सम्पूर्ण पवित्र था... मेरा परलौकिक पिता परमात्मा शिव पवित्रता के सागर है.... मै उनकी संतान पवित्र स्वरूप हूँ.... पवित्रता ही मेरी वास्तविकता (Reality) है.... पवित्रता ही मेरी परसनालिटी है... पवित्रता ही मेरी रोयल्टी है... आह मै आत्मा कितनी पवित्र हूँ.... विशुध्ध हूँ.... मुज ज्योतिबिंदु आत्मा में से चारो और पवित्रता ही पवित्रता फ़ैल रही है...

सुख और आनंद: आनंद भी मुज आत्मा का मूलभूत स्वभाव है, स्वधर्म हैं.... सुख मेंरी अनादी संपत्ति है.... सृष्टि चक्र के मेरे आदि के जन्मो मे, जब मै आत्मिक स्मृति में था तब मेरा देवता स्वरुप का जीवन सुख और आनंद से संपन्न था.... में निजानंद, परमानंद स्वरूप आत्मा हूँ..... वर्तमान में भी में मेरी स्वस्मृति में स्थित हूँ.... और परम सुख और परम आनंद का सहज अनुभव कर रही हूँ.....

शक्ति : शक्ति मुज आत्मा का विशिष्ट स्वधर्म है.... मै मूल स्वरूप मे शक्ति संपन्न आत्मा हूँ... मेरा हर विचार, मेरा हर कर्म मुज आत्मा की शक्ति से उत्पन्न होता है... और संपन्न होता है... मुज आत्मा की शक्ति से मेरी हर कर्मेन्द्रिया और ज्ञानेद्रिया मेरे वश मे है.... वर्त्तमान समय मैं आत्म इन शक्तियों द्वारा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे विकारो से युध्ध कर उन पर विजय पाती हूँ.... मै आत्मा शक्ति का रूप हूँ .. मै आत्मा शक्ति की एक ज्वाला हूँ... इस ज्वाला मे मेरे जन्म जन्मांतर के विकर्म भस्म हो रहे है... मै आत्मा विकर्म के बोज से मुक्त हो रही हूँ... हलकी हो रही हूँ... मुज ज्योति आत्मा का पिता महा ज्योति परमात्मा शक्ति के सागर है... सर्व शक्तिवान है... मै उनकी संतान मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ...

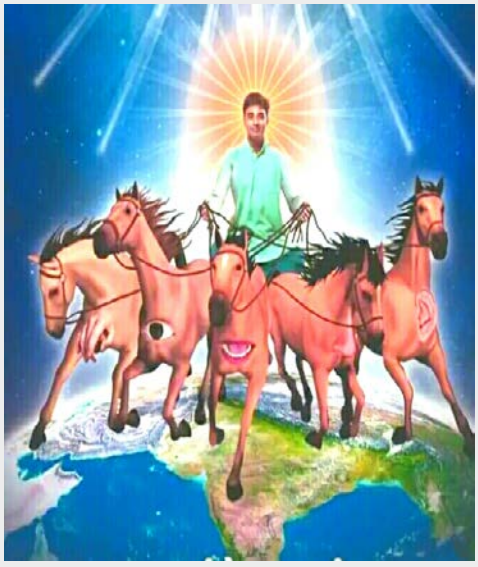

आत्मा के स्वधाम की अनुभूति :

मुज आत्मा का निज धाम परमधाम हैं.... जो आकाश और अवकाश से भी परे... सितारों की दुनिया से भी परे... ऊँचे ते ऊँचा धाम हैं... यहा पांच तत्वों का कोई अस्तित्व नहीं हैं..... जहा अनंत तक सुनहरे लाल प्रकाश का ब्रह्म तत्व ही फैला हुआ है... वह पवित्र लाल प्रकाश से आच्छादित है... जहा परम शांति, नीरव शांति, शांति ही शांति है.... इस स्थान पर बीज रूप मै आत्मा परम शांति, प्रगाढ़ शांति का अनुभव कर रही हूँ... आह कितना सुन्दर...सुहावना है... यह मेरा निज धाम...

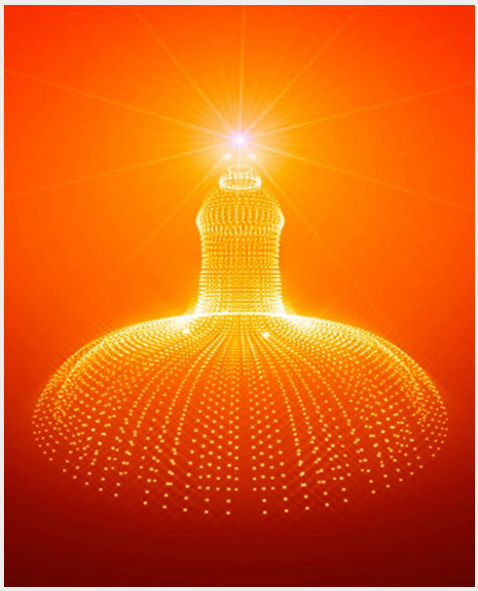

====== ॐ शान्ति... शान्ति.... शान्ति ======

ब्र. कु. प्रफुल्लचन्द्र

(M) +91 98258 92710